भजन

तर्ज..... आप के हसीन रुख

आपकी निगाहों से नूर यूं बरस रहा
ऐसा लगता रंग ये इश्क का है बढ़ रहा
इधर भी दिल में रूह के इश्क शोर कर रहा
बेकरारी में ये दिल सम्भले ना सम्भल रहा
(1) मोहिनी छबि आपकी कुछ ऐसे दिल में छा गई,
दिल ही जाने दिल को ये क्या नशा पिला गई
अटकी है नजर... अटकी है नजर
अटकी है नजर, नजर से रस ये दिल में भर रहा
ऐसा लगता रंग....

(२) बूंद-बूंद से पिया ना प्यास रुह की बुझे
पैदरपे जो पिलाओ तो बात कुछ है बने
पनाह में रुह को ले हुकम ना गिरने प्याला दे रहा

3) खुमारी में आनन्द के रुह ये रहना चाहती है
मैं खुदी के बन्धनों से निकलना चाहती है
आपका हुकम... आपकी मेहर
आपका हुकम रूह को इश्क में डुबो रहा
ऐसा लगता.....